पाठ - 8

الدرس الثامن - هندي

कलिमए तौहीद की शर्तें (3)

تابع شروط لا إله إلا الله

6. **इख़्लास** : नेक नीयती के साथ इंसान का अपने अमल को शिर्क से पाक रखने को इख़्लास कहते हैं। इसकी कैफ़ियत यह है कि वह अपनी समस्त कथनी और करनी ख़ालिस अल्लाह की खुशी हासिल करने के लिए करें। उसमें दिखावा, नुमाइश, लाभ, व्यक्तिगत उद्देश्य और ज़ाहिरी या गुप्त शहवत न हो या किसी व्यक्ति, धर्म या अल्लाह की अवतरित की हुई दलीलों के बिना उस अमल को कर रहा हो। ज़रूरी है कि इंसान अपने सत्कर्म के ज़रिया अल्लाह की खुशनूदी और आखिरत की कामयाबी को नज़र के सामने रखे। उसका दिल किसी इन्सान से धन्यवाद या शुक्रिया की उम्मीद न रखे। अल्लाह तआला फ़रमाता है ﴿أَلَا لِلَّهِ الدِّينُ الْخَالِصُ﴾

यानी, "ख़बरदार! अल्लाह तआला ही के लिए ख़ालिस इबादत करना है (सूरह अलज़ुम्र, आयत 3) दूसरी जगह अल्लाह तआला फ़रमाता है

यानी, "उन्हें इसके सिवा कोई आदेश नहीं दिया गया कि केवल अल्लाह की इबादत करें, उसी के लिए दीन को ख़ालिस और शुद्ध रखें (सूरह अलबैय्यिना, आयत 5)

बुखारी और मुस्लिम में इतबान रजियल्लाहु अन्हु की हदीस में आया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

अल्लाह ने उस व्यक्ति पर जहन्नम की आग को हराम कर दिया है जो अल्लाह की खुशनूदी निकटता प्राप्ति के लिए ला इलाह इल्लल्लाह पढ़ता है (मुत्तफ़क़ अलैह)

7. **मुहब्बत** इस कलिमा से, कलिमा के भाव से, और उसके तक़ाज़ों से मुहब्बत होनी चाहिए। इंसान को चाहिए कि वह अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत करे और मुहब्बत की शर्तों और उसके आवश्यक्ताओं को पूरा करे। अल्लाह की मुहब्बत के साथ सम्मान, भय, और आशा के पहलू को हमेशा सामने रखे। इसके अलावा अल्लाह जिन चीज़ों से मुहब्बत करता है, वह भी उन सभी चीज़ों से भी मुहब्बत करे ।

यह मुहब्बत ही है कि अल्लाह की पसंदीदा चीज़ों को अपने आत्मा की प्रिय चीज़ों, कामनाओं, इच्छाओं से बढ़ कर समझे और जिन चीजों को अल्लाह नापसंद करता है जैसे कुफ्र, भष्टाचार और गुनाह आदि उनको अप्रिय समझा जाए। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَنْ يَرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِينِهِ فَسَوْفَ يَأْتِي اللهُ بِقَوْمٍ يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّونَهُ أَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ أَعِزَّةٍ عَلَى الْكَافِرِينَ يُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللهِ وَلَا يَخَافُونَ لَوْمَةَ لَائِمٍ﴾

यानी, "ए ईमान वालो! तुम में से जो व्यक्ति अपने दीन से फिर जाए तो अल्लाह तआला बहुत जल्द ऐसे लोगों को लाएगा जो अल्लाह को महबूब होंगे और वह भी अल्लाह से मुहब्बत करते होंगे और मुसलमानों पर नर्म दिल होंगे और काफ़िरों पर सख़्त व कठोर होंगे, अल्लाह की राह में जिहाद (धर्म युद्ध) करेंगे और किसी तिरस्कार करने वाले की तिरस्कार की परवाह नहीं करेंगे (सूरह अलमायदा, 54)